हम चेते नहीं तो सर्वनाश सुनिश्चित है

- द्वितीय विश्व युद्ध के समय हिरोशिमा पर परमाणु बम गिरने से जितनी ऊर्जा उत्सर्जित हुई थी, वैसे 4 लाख बमों जितनी ऊर्जा से हमारी धरती प्रतिदिन गरम हो रही है।

  – जेम्स हैन्सेन, निदेशक गोड्डार्ड, नासा

- धरती पर अभी तक उत्पादित कार्बनडाई ऑक्साइड की कुल मात्रा का 50% उत्पादन केवल पिछले 25 वर्षों में हुआ है, जिसका दुष्प्रभाव हजारों-लाखों वर्षों तक दिखाई देगा।

  – डेविड वेल्सास की लिखी पुस्तक 'पीपल शुड बी स्केअर्ड, आई एम स्केअर्ड' से

- क्या आप अपने बच्चों से सचमुच प्यार करते हैं? उनसे प्यार करते हैं और अपनी आँखों के सामने उनका भविष्य चुरा रहे हैं?

  – ग्रेटा थनबर्ग, स्वीडन की 16 वर्षीया युवती, यूएन में COP24 में

महाचण्डी बनी प्रकृति दे रही है चेतावनी

अखण्ड ज्योति, अप्रैल-2005, पृष्ठ 6 पर उपरोक्त शीर्षक से पर्यावरण संकट के समाधान के लिए निम्न तथ्य प्रस्तुत किये गये हैं।

प्रकृति के परिवर्तन का स्वरूप अनोखा है। वह पहाड़ों को सागर में बदल सकती है और सागर में पर्वत शृंखला खड़ी कर सकती है और ऐसा हुआ भी है। परन्तु मानवीय दुर्बुद्धि ने माता प्रकृति के आवरण को तार-तार करनेमें कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है।

प्रकृति माता शीतल और शांत हैं। हमें भी ऐसा ही प्रयास और पुरुषार्थ करना चाहिए। भोग-विलास और सुख-सुविधाओं के सामान जुटाने की आँधी और होड़ में हम बेतहाशा कार्बन डाई ऑक्साइड झोंक कर प्रकृति माता की शांति को विच्छिन्न कर रहे हैं। अपनी स्वार्थ प्रधान करतूतों से हम हर साल लगभग 36 गीगा टन (वर्तमान समय में) कार्बन डाई ऑक्साइड वायुमंडल में बिखेर रहे हैं और इन विषैल गैसों को सोखने वाले तथा प्राणवायु प्रदान करने वाले वनों का बड़ी तेजी से सफाया भी कर रहे हैं। हमने अपने स्वार्थ और शोषण की सारी सीमाएँ और मर्यादाओं को तोड़ दिया है तथा इस सर्वनाशी वृत्ति से धरती की हरियाली का विनाश करने से भी चूक नहीं रहे हैं। ऐसे में हमारी उलटी बुद्धि को ठीक करने के लिए प्रकृति माता महाचंडी बनकर अपना विकराल और भीषण रूप लेकर सामने आ रही है। समय रहते सँभल जाने से ही इस अनहोनी से बचा जा सकता है, अन्यथा हमें अपने ही सर्वनाश के लिए तैयार रहना होगा।

नियति कालचक्र पर आरूढ़ हो चुकी है। महाकाली का महानाद अत्यंत अबूझ एवं गूढ़ है। हम इससे पार नहीं पा सकते। अतः आवश्यक है कि हम इसकी शरण में जायें। प्रकृति के लिए असंभव और अनहोनी कुछ भी नहीं है। वह कुछ भी कर सकती है, परंतु हे माता! हम कुपात्रों को बारंबार क्षमा कर शांत हो और समृद्धि दो। विनाश के पथ पर चलते-चलते हमारे पैर छल्नी हो गए हैं, तुझे भी भारी क्षति पहुँची है। अब हम विकास के यात्री बनना चाहते हैं। आइए, हम धरती माता की सब संतानें धरती केपरिवेश और पर्यावरण को समृद्ध करने का संकल्प उठाएँ, जिससे रत्नगर्भा धरती माता हम सबको ऐश्वर्य और समृद्धि से भर दे।

महाविनाश से बचने के लिए
सुविधाओं की होड़ छोड़ें,
'सादा जीवन-उच्च विचार'
सूत्र अपनायें और
धरती माता को हरियाली से
आच्छादित करने में जुट जायें।

ध्यानाकर्षक तथ्य

- इन दिनों धरती पर 10 करोड़ बैरल तेल प्रतिदिन जलाया जाता है।
- पिछले 4 वर्ष क्रमशः 2016, 2017, 2015, 2018 अब तक के सबसे गर्म वर्ष रहे।
- हमारा सागर प्रति सेकण्ड 3 से 6 परमाणु बम जितनी ऊर्जा से गरम हो रहा है। PANS-19
- बहुत जल्दी गर्मी के दिनों में आर्कटिक ध्रुव की बर्फ पिघल जायेगी।
- संसार में सबसे तेजी से हिमालय क्षेत्र गर्म हो रहा है, जिसके कारण सदी के अन्त तक एक तिहाई ग्लेशियर समाप्त हो जाने की भविष्यवाणी की जा रही है।
- मांसाहार पर्यावरण को हो रहे नुकसान का सबसे बड़ा कारण है।
- आज प्रतिदिन 200 जीव प्रजातियाँ विलुप्त हो रही हैं। यह गति 1000 से 10000 गुना अधिक है। कुछ लोग इस समय को छठा प्रलय काल भी कह रहे हैं।
- पिछले 50 वर्षों में दुनिया की 90% बड़ी मछलियाँ समाप्त हो चुकी हैं।
- मधुमक्खी की प्रजाति समाप्त होने की ओर तेजी से अग्रसर है, जिसका दुष्प्रभाव हमारी फसलों पर होना सुनिश्चित है।